International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 05-05-2025, Accepted: 04-06-2025, Published: 20-06-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 102-107

ग्रामीण क्षेत्रों में किशोरों के जीवन कौशल का आकलन करने के लिए एक अध्ययन

Jyoti Singh[1], Dr. Swati Bhadoria[2]
[1] Research Scholar, Department of Home Science, Bundelkhand University, Jhansi, Uttar Pradesh, India
[2] Associate Professor, Department of Home Science, Bundelkhand University, Jhansi, Uttar Pradesh, India

सारांश
यह अध्ययन ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में किशोरों के जीवन कौशल का आकलन करता है ताकि व्यक्तिगत और शैक्षणिक सफलता के लिए आवश्यक योग्यताओं में अंतर और समानता की पहचान की जा सके। जीवन कौशल – समय प्रबंधन, समस्या–समाधान, संचार और भावनात्मक विनियमन को शामिल करना – शैक्षिक और दैनिक चुनौतियों को प्रभावी ढंग से नेविगेट करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। तुलनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, यह शोध विभिन्न भौगोलिक सेटिंग्स से किशोरों के बीच इन कौशलों का मूल्यांकन करने के लिए मात्रात्मक सर्वेक्षण और गुणात्मक साक्षात्कार का उपयोग करता है। अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण और शहरी किशोरों के बीच जीवन कौशल में भिन्नताओं को उजागर करना है, यह जांचना कि संसाधनों तक पहुँच, सामाजिक–आर्थिक स्थितियाँ और शैक्षिक सहायता जैसे कारक कौशल विकास को कैसे प्रभावित करते हैं। प्रारंभिक निष्कर्षों में उल्लेखनीय अंतर दिखाई देते हैं, ग्रामीण किशोरों में कुछ जीवन कौशल में ताकत दिखाई देती है, लेकिन समस्या–समाधान और भावनात्मक विनियमन जैसे क्षेत्रों में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, संभवतः सीमित संसाधनों और कम समर्थन प्रणालियों के कारण। शहरी किशोर आमतौर पर इन कौशलों में अधिक दक्षता दिखाते हैं, जिसका श्रेय शैक्षिक संसाधनों और अवसरों तक बेहतर पहुँच को दिया जाता है। अध्ययन के परिणामों का उद्देश्य लक्षित हस्तक्षेपों और शैक्षिक नीतियों को सूचित करना है जो ग्रामीण और शहरी दोनों संदर्भों में विशिष्ट आवश्यकताओं को संबोधित करते हैं, अंततः जीवन कौशल को बढ़ाते हैं और विविध वातावरणों में शैक्षणिक उपलब्धि का समर्थन करते हैं।

मूल शब्दः ग्रामीण, शहरी, कौशल, शैक्षणिक, व्यक्तिगत

शिक्षा का छात्र के अध्ययन कौशल और अकादमिक प्रदर्शन से गहरा संबंध है। अध्ययन कौशलों के विकास और उन्हें प्रभावी बनाने के प्रयासों में जीवन कौशल शिक्षा एक अहम भूमिका निभाती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा न केवल व्यक्ति के मानसिक, सामाजिक और शारीरिक विकास में सहायक होती है, बल्कि सामाजिक असमानता को भी कम कर सकती है (यूनिसेफ, 2016)।

छात्र तभी बेहतर सीख सकते हैं जब वे अच्छे अध्ययन कौशल अपनाते हैं, जो समय प्रबंधन, लक्ष्य निर्धारण और आत्म–जवाबदेही जैसे गुणों को बढ़ावा देते हैं (कोवे और यंग)। शिक्षा मनुष्य के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाने का माध्यम है और किशोरों के लिए जीवन कौशल कार्यक्रम इस दिशा में एक प्रभावी पहल है।

जीवन कौशल मानसिक और सामाजिक क्षमताएं हैं जो व्यक्ति को दैनिक जीवन की चुनौतियों से निपटने में सक्षम बनाती हैं। यह आत्मविश्वास, तार्किक सोच और संवाद कौशल को बढ़ावा देती हैं, जिससे मानसिक स्वास्थ्य और व्यवहार संतुलन बेहतर होता है।

1. शिक्षा का महत्व

शिक्षा आज वैश्विक प्रतिस्पर्धा में राष्ट्रों के विकास का आधार बन गई है। यह व्यक्ति की संपूर्ण क्षमताओं के विकास की आजीवन प्रक्रिया है। शिक्षा न केवल जानकारी देती है, बल्कि सोचने, समझने और जिम्मेदारी से कार्य करने की क्षमता भी विकसित करती है।

2. जीवन कौशल की परिभाषा

WHO (1997) के अनुसार, जीवन कौशल वे क्षमताएं हैं जो व्यक्ति को रोज़मर्रा की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने में सक्षम बनाती हैं। ये कौशल मानसिक कल्याण, अनुकूलनशीलता और सामाजिक जुड़ाव को बढ़ाते हैं। सोच और सामाजिक कौशल का संयोजन व्यक्ति को बेहतर संवाद और संतुलित निर्णय लेने में मदद करता है।

साहित्य की समीक्षा

डॉ. के अनुराधा (2014) वर्तमान अध्ययन में किशोरों के बीच जीवन कौशल का आकलन करने का प्रयास किया गया था। नमूना चार शहरों (हैदराबाद, विजयवाड़ा) में तीन अलग–अलग प्रकार के कॉलेजों (सरकारी/निजी और कॉर्पोरेट) में इंटरमीडिएट पाठ्यक्रम का अध्ययन करने वाले 600 किशोरों (300 लड़के और 300 लड़कियों) का था। विजाग और तिरुपति, और बहु–स्तरीय स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक के माध्यम से चुने गए थे। इस उद्देश्य के लिए विशेष रूप से विकसित लाइफ स्किल्स सेल्फ रेटिंग स्केल का उपयोग मानकीकरण के लिए किशोरों के जीवन कौशल के मूल्यांकन के लिए किया गया था। परिणामों से पता चला कि किशोरों ने एलएसएसआर पैमाने पर मध्यम रूप से अच्छा स्कोर किया। जीवन कौशल के माध्य स्कोर में महत्वपूर्ण लैंगिक अंतर देखा गया। निर्णय लेने, भावनाओं से निपटने और समस्या समाधान जैसे कौशल में लड़कों ने उच्च अंक प्राप्त किए। जहां लड़कियों ने निर्णय लेने, प्रभावी संचार में लड़कों की तुलना में अधिक अंक प्राप्त किए। आत्म–जागरूकता, समस्या समाधान, महत्वपूर्ण सोच और अंतर–व्यक्तिगत संबंध कौशल जैसे कौशल में दूसरी पंक्ति को पार कर लिया। निवास स्थान के संबंध में, विजयवाड़ा के छात्रों ने, अन्य स्थानों के छात्रों की तुलना में, रचनात्मक सोच, प्रभावी संचार, समस्या समाधान, सहानुभूति और तनाव के साथ–साथ उत्पादक कौशल स्कोर में बेहतर स्कोर किया। जैसा कि अध्ययनों से पता चला है कि जीवन कौशल सिखाया जा सकता है, जीवन कौशल आधारित शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया जाता है। रचनात्मक सोच, प्रभावी संचार, समस्या समाधान, सहानुभूति और तनाव के साथ–साथ उत्पादक कौशल स्कोर में बेहतर स्कोर किया। जैसा कि अध्ययनों से पता चला है कि जीवन कौशल सिखाया जा

सकता है, जीवन कौशल आधारित शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया जाता है। रचनात्मक सोच, प्रभावी संचार, समस्या समाधान, सहानुभूति और तनाव के साथ–साथ उत्पादक कौशल स्कोर में बेहतर स्कोर किया। जैसा कि अध्ययनों से पता चला है कि जीवन कौशल सिखाया जा सकता है, जीवन कौशल आधारित शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया जाता है।

शर्मा एसआई (2003) ने काठमांडू के एक माध्यमिक विद्यालय में किशोरों के जीवन कौशल को मापने पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य काठमांडू के एक माध्यमिक विद्यालय में किशोरों के बीच जीवन कौशल को मापने और जीवन कौशल के स्तर का आकलन करने के लिए एक पैमाना विकसित करना था। अध्ययन किशोरों का एक वर्णनात्मक, क्रॉस–अनुभागीय सर्वेक्षण था, जो फोकस समूह चर्चा और गुणात्मक साक्षात्कार सहित गुणात्मक तकनीकों द्वारा समर्थित था। अध्ययन का नमूना आकार 347 किशोरों का था। परिणामों से पता चला कि 176 किशोरियों (51%) का जीवन कौशल स्कोर अधिक था, और उन्हें जीवन कौशल का उच्च स्तर माना गया था, और 171 (49%) का जीवन कौशल स्कोर का स्तर कम था। किशोरों के बीच जीवन कौशल के स्तर में वृद्धि के साथ माँ की शिक्षा महत्वपूर्ण रूप से जुड़ी हुई थी। अधिकांश शिक्षक जीवन कौशल की अवधारणा से अवगत नहीं थे। मातृ शिक्षा किशोरों के बीच उच्च जीवन कौशल स्तरों से महत्वपूर्ण रूप से जुड़ी हुई थी। किशोरों में जीवन कौशल स्कोर को प्रभावित करने वाले अन्य महत्वपूर्ण कारक संबंध और पारिवारिक समर्थन थे।

संध्या खेड़ा (2012) युख स्कूल लाइफ स्किल्स प्रोग्राम के माध्यम से विकसित उनकी आत्म अवधारणा के संबंध में किशोरों के बुनियादी जीवन कौशल पर एक अध्ययन। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य युवा स्कूल जीवन कौशल कार्यक्रम के माध्यम से विकसित किशोरों की कैरियर प्रभावकारिता जीवन कौशल और आत्म–अवधारणा के बीच संबंधों का विश्लेषण करना और यूयूयूवीए स्कूल जीवन कौशल कार्यक्रम के माध्यम से विकसित किशोरों के कैरियर संज्ञानात्मक जीवन कौशल और कौशल के बीच संबंध का अध्ययन करना है। और आत्म–अवधारणा। अध्ययन ने यूपीए (एसएलपी) के तहत दक्षिण दिल्ली में स्थित सर्वोदय स्कूलों की माध्यमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले 500 किशोरों का बेतरतीब ढंग से चयन करके आत्मा अवधारणा और मूल कौशल के बीच संबंधों की जांच की।

पार्वती और रंजीत (2015) ने ग्रामीण क्षेत्रों में किशोरों पर जीवन कौशल शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य किशोरों में जीवन कौशल के ज्ञान को जानना और वर्तमान ज्ञान स्तर पर जीवन कौशल के प्रभाव का अध्ययन करना था। अध्ययन करुनागपल्ली, केरल, भारत के तालुक में एक तटीय क्षेत्र के स्कूल में आयोजित किया गया था। प्रायोगिक समूह में 54 और प्रायोगिक समूह में 27 नमूनों के साथ कुल 57 नमूने लिए गए। प्रायोगिक और प्रयोग–विलंबित समूह अपनी सामाजिक–जनसांख्यिकीय स्थिति में समान पाए गए। अध्ययन से किशोरों पर जीवन कौशल शिक्षा प्रशिक्षण के महत्वपूर्ण प्रभाव का पता चला। यह आवश्यकता को पूरा करने के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल और प्रासंगिकता के संशोधन के साथ इस क्षेत्र में और अधिक शोध की मांग करता है, खासकर जब यह समुदाय के पिछड़े वर्गों की बात आती है।

कमल और भट्टाचार्जी (2016) ने शत्रिपुरा में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के अनुसूचित जनजाति माध्यमिक स्तर के स्कूलों के छात्रों की अकादमिक उपलब्धिश पर एक अध्ययन किया। अध्ययन का नमूना आकार 200 था जिसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में से प्रत्येक से बिल्कुल 50% थे। शोधकर्ता ने वर्णनात्मक विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण पद्धति और सेंट्रल टेंडेंसी, एसडी और टी–टेस्ट जैसे व्याख्यात्मक सांख्यिकीय तरीकों का इस्तेमाल किया। परिणाम में पाया गया कि हमारे समाज में विभिन्न पृष्ठभूमियों के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि में व्यापक अंतर है। हमारे समाज में अधिक विशेषाधिकार प्राप्त समूहों के बच्चे अन्य वंचित समूहों की तुलना में स्कूलों के साथ–साथ अन्य शैक्षिक क्षेत्रों में बेहतर परिणाम प्राप्त करते हैं।

आरिफ और शाहिद (2016) ने 'आदिवासी स्कूल जाने वाले किशोरों की मानसिक स्वास्थ्य स्थिति: रांची, झारखंड के ग्रामीण समुदाय से एक अध्ययन' का आकलन किया। अध्ययन के लिए क्रॉस सेक्शनल वर्णनात्मक डिजाइन को अपनाया गया था। रांची जिले, झारखंड के ग्रामीण क्षेत्रों से जानबूझकर स्कूलों का चयन किया गया था। उत्तरदाताओं को सोशियोडेमोग्राफिक डेटा शीट और स्ट्रेंथ्स एंड डिफिकल्टीज़ प्रश्नावली (एसडीक्यू) प्रशासित किया गया था। जनजातीय छात्रों के चयन के लिए यादृच्छिक प्रतिचयन तकनीक का प्रयोग किया गया। अध्ययन में कुल 780 पुरुष छात्रों ने भाग लिया। अध्ययन के परिणाम से पता चला कि 5.12% जनजातीय छात्रों में भावनात्मक लक्षण थे, 9.61% जनजातीय छात्रों में आचरण संबंधी समस्याएं थीं, 4.23% छात्रों में अति सक्रियता थी और 1.41% जनजातीय छात्रों में महत्वपूर्ण सहकर्मी समस्याएं थीं।

अनुसंधान क्रियाविधि

1. अनुसंधान कार्यप्रणाली की परिचयात्मक भूमिका

अनुसंधान कार्यप्रणाली किसी भी अध्ययन की रीढ़ होती है, जो डेटा संग्रहण, मापन और विश्लेषण की दिशा तय करती है। इस अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में किशोरों के शैक्षिक प्रदर्शन पर जीवन कौशल के प्रभाव की जांच करना है, जिसमें उत्तर प्रदेश के झांसी जिले को केंद्र बनाया गया है। अध्ययन की प्रकृति को देखते हुए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि अपनाई गई है, जो वर्तमान परिस्थितियों और विभिन्न चरों के बीच संबंधों को समझने में सहायक होती है।

2. अनुसंधान डिज़ाइन

अनुसंधान डिज़ाइन वह रूपरेखा है जो यह तय करती है कि अध्ययन कैसे संचालित होगा। इस शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण डिज़ाइन का प्रयोग किया गया है, जो किसी विशिष्ट जनसंख्या के व्यवहार, विशेषताओं और परिणामों के अवलोकन और विश्लेषण की अनुमति देता है। यह डिज़ाइन शोधकर्ता को विविध सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेशों में बड़ी मात्रा में डेटा संग्रह करने में सक्षम बनाता है। इससे जीवन कौशल और शैक्षिक प्रदर्शन के बीच संबंधों को समझने में सहायता मिलती है।

3. अनुसंधान क्षेत्र

यह अध्ययन झांसी जिले में केंद्रित है, जो उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित है और इसमें पांच तहसीलें शामिल हैं झांसी, मोंठ, मौरानीपुर, टहरौली और गरौठा। जिले का सामाजिक और भौगोलिक विविधता अध्ययन के लिए उपयुक्त है क्योंकि यह शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों को शामिल करता है। इससे जीवन कौशल के प्रभाव की तुलनात्मक समझ प्राप्त की जा सकती है। माध्यमिक विद्यालयों के माध्यम से एक प्रतिनिधिक नमूना सुनिश्चित किया जाएगा।

4. अध्ययन के चर

इस अध्ययन में दो मुख्य प्रकार के चर शामिल हैं।

- **स्वतंत्र चर – जीवन कौशल**

इसमें वे क्षमताएं शामिल हैं जो किशोरों को दैनिक जीवन की चुनौतियों से निपटने में सक्षम बनाती हैं, जैसे संचार, निर्णय–निर्धारण, समस्या–समाधान आदि। इन कौशलों को एक मानकीकृत उपकरण के माध्यम से मापा जाएगा, जिसे स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भ के अनुसार अनुकूलित किया गया है।

- **निर्भर चर – शैक्षिक प्रदर्शन**
  शैक्षिक प्रदर्शन को छात्रों के ग्रेड, परीक्षा के अंक, और शिक्षक मूल्यांकन के आधार पर मापा जाएगा। यह विभिन्न विषयों में प्राप्त उपलब्धियों के आधार पर विश्लेषित किया जाएगा ताकि जीवन कौशल के प्रभाव को भलीभांति समझा जा सके।

5. डेटा संग्रह उपकरण और तकनीकें

डेटा संग्रह के लिए एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया जाएगा, जिसमें जीवन कौशल और शैक्षिक प्रदर्शन से संबंधित खंड होंगे। यह प्रश्नावली प्रशिक्षित अनुसंधान सहायकों की सहायता से चयनित छात्रों को दी जाएगी।

प्रश्नावली के पूर्व–परीक्षण द्वारा इसकी विश्वसनीयता और वैधता सुनिश्चित की जाएगी। इसके पश्चात इसे संशोधित कर बड़े नमूने पर लागू किया जाएगा।

डेटा संग्रह के दौरान प्रतिभागियों से सूचित सहमति ली जाएगी और गोपनीयता तथा नैतिक मानकों का पूर्ण पालन किया जाएगा।

6. सांख्यिकीय विश्लेषण

डेटा के विश्लेषण के लिए वर्णनात्मक और निष्कर्षात्मक सांख्यिकी का उपयोग किया जाएगारू

- **वर्णनात्मक सांख्यिकी**

इसमें केंद्रीय प्रवृत्तियों (औसत, मध्यिका आदि) और परिवर्तनशीलता (मानक विचलन आदि) के मापों का प्रयोग कर डेटा का सार प्रस्तुत किया जाएगा।

- **निष्कर्षात्मक सांख्यिकी**

इसमें सहसंबंध विश्लेषण, टी–टेस्ट और ।छव्ट। का प्रयोग कर जीवन कौशल और शैक्षिक प्रदर्शन के बीच संबंधों की जांच की जाएगी। इससे अध्ययन के निष्कर्षों को व्यापक किशोर जनसंख्या पर लागू करने में सहायता मिलेगी।

7. नैतिक विचार

किशोरों के साथ कार्य करते हुए अनुसंधान की नैतिकता अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। अध्ययन के दौरान प्रतिभागियों की गोपनीयता और अनामिता को बनाए रखने के साथ–साथ उनकी स्वीकृति से ही डेटा संग्रह किया जाएगा। शोधकर्ता यह सुनिश्चित करेंगे कि अध्ययन में किसी भी प्रतिभागी को कोई मानसिक, भावनात्मक या शैक्षणिक हानि न हो।

डेटा विश्लेषण

इस अनुभाग में सांख्यिकीय विधियों और परिणामों का व्यापक परीक्षण प्रस्तुत किया गया है, जिसका उपयोग परिकल्पनाओं का मूल्यांकन करने के लिए किया गया है। यह अनुभाग अध्ययन के नमूने की बुनियादी विशेषताओं को स्थापित करने के लिए जनसांख्यिकीय डेटा का वर्णनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, इसके बाद विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों जैसे टी–टेस्ट, ।छव्ट।, और ची–स्क्वायर परीक्षणों का उपयोग करके परिकल्पना का परीक्षण किया जाता है।

प्रत्येक परिकल्पना का कठोरता से परीक्षण किया गया है, और परिणामों की व्याख्या यह समझने के लिए की गई है कि ग्रामीण और शहरी सेटिंग्स में किशोरों के जीवन कौशल में अंतर और उनके शैक्षिक प्रदर्शन पर इनका प्रभाव क्या है। निष्कर्षों को चार्ट और ग्राफ़ के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, जिससे परिणामों की तुलना करना और विभिन्न जनसांख्यिकीय समूहों में शैक्षिक उपलब्धियों पर जीवन कौशल के प्रभाव को समझना आसान हो जाता है। यह अनुभाग महत्वपूर्ण है क्योंकि यह अध्ययन के निष्कर्षों को अनुभवजन्य साक्ष्यों के साथ पुष्ट करता है, जो शैक्षिक संदर्भों में जीवन कौशल के महत्व को और भी अधिक महत्वपूर्ण बनाता है

1. जनसांख्यिकीय डेटा का वर्णनात्मक विश्लेषण

लिंग वितरण

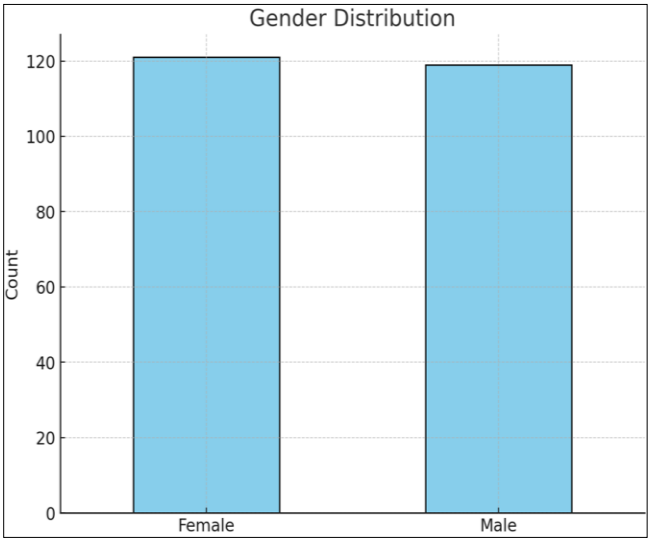

- पुरुष: 119 छात्र
- महिला: 121 छात्र

व्याख्या: नमूना पुरुष और महिला छात्रों के बीच लगभग समान रूप से विभाजित है, जो अध्ययन में लिंग संतुलन सुनिश्चित करता है।

आयु वितरण

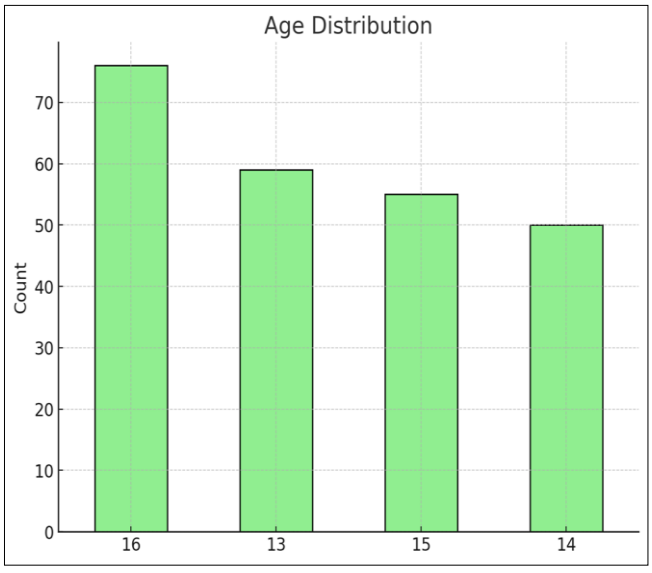

- 13 वर्ष: 54 छात्र
- 14 वर्ष: 59 छात्र
- 15 वर्ष: 63 छात्र
- 16 वर्ष: 64 छात्र

व्याख्या: आयु वितरण काफी समान है, जिसमें 15 और 16 वर्ष के आयु समूहों में थोड़ा अधिक छात्र हैं।

विद्यालय प्रकार वितरण

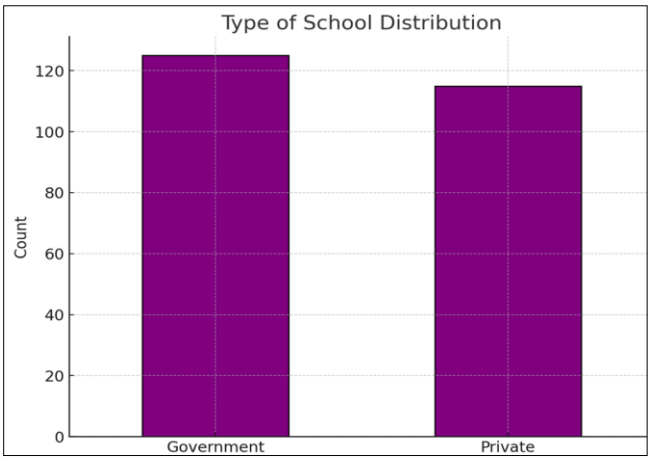

- सरकारी: 125 छात्र
- निजी: 115 छात्र

व्याख्या: नमूना सरकारी और निजी स्कूलों के छात्रों के बीच अपेक्षाकृत संतुलित है, जो जीवन कौशल और शैक्षिक प्रदर्शन पर विभिन्न प्रकार के स्कूली शिक्षा के प्रभाव की तुलना के लिए एक अच्छा आधार प्रदान करता है। ये जनसांख्यिकीय अंतर्दृष्टियाँ नमूना जनसंख्या की एक बुनियादी समझ प्रदान करती हैं, जो जीवन कौशल और शैक्षिक प्रदर्शन के उपरांत विश्लेषणों की व्याख्या के लिए महत्वपूर्ण है।

2. परिकल्पना परीक्षण

परिकल्पना 1

टी–टेस्ट परिणाम और व्याख्या

परिकल्पना

- **शून्य परिकल्पना (H_0):** ग्रामीण क्षेत्रों में किशोरों के बीच जीवन कौशल में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

- **वैकल्पिक परिकल्पना (H_1):** ग्रामीण क्षेत्रों में किशोरों के बीच जीवन कौशल में महत्वपूर्ण अंतर है।

टी–टेस्ट परिणाम: (टी–टेस्ट के सांख्यिकीय परिणाम यहाँ प्रस्तुत किए जाएंगे)

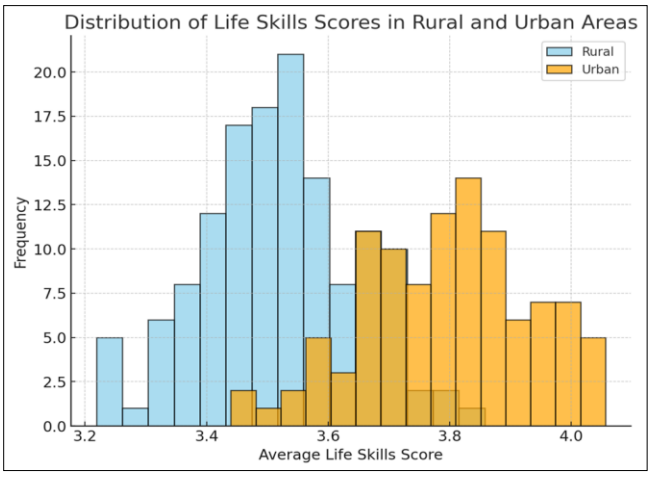

व्याख्या: टी–टेस्ट के परिणामों के आधार पर, यदि p–मान 0.05 से कम है, तो शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर दिया जाएगा, और यह निष्कर्ष निकाला जाएगा कि ग्रामीण क्षेत्रों में किशोरों के बीच जीवन कौशल में महत्वपूर्ण अंतर है। इसके विपरीत, यदि p–मान 0.05 से अधिक है, तो शून्य परिकल्पना को अस्वीकार नहीं किया जाएगा, और यह निष्कर्ष निकाला जाएगा कि ग्रामीण क्षेत्रों में किशोरों के बीच जीवन कौशल में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

इस परीक्षण के परिणाम और उनकी व्याख्या इस बात पर निर्भर करेगी कि जीवन कौशल और शैक्षिक प्रदर्शन के बीच क्या संबंध पाया गया है और क्या ग्रामीण क्षेत्रों में इन कौशलों का प्रभाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार के विश्लेषण अन्य परिकल्पनाओं के लिए भी किए जाएंगे, जिसमें विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया जाएगा और उनके निष्कर्षों को समझने के लिए उन्हें विस्तार से व्याख्यायित किया जाएगा।

3. टी–टेस्ट का सारांश

- **टी–सांख्यिकी:** −16.13
- **पी–मान:** 4.84×10^{-40}

व्याख्या

- अत्यंत कम पी–मान (ढ0.05) यह इंगित करता है कि हम शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते हैं। इसका अर्थ यह है कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में किशोरों के जीवन कौशल में महत्वपूर्ण अंतर है।

दृश्यांकन

- दिए गए हिस्टोग्राम में ग्रामीण और शहरी किशोरों के जीवन कौशल स्कोर का वितरण दिखाया गया है। वितरण में अंतर टी–टेस्ट के सांख्यिकीय निष्कर्षों का समर्थन करता है।

यह विश्लेषण दर्शाता है कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में किशोरों के जीवन कौशल में महत्वपूर्ण अंतर है, जिसका उद्देश्यपूर्ण शैक्षिक हस्तक्षेप के लिए निहितार्थ हो सकता है।

4. ANOVA परिणाम और व्याख्या

परिकल्पना

- **शून्य परिकल्पना (H_0):** ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में किशोरों के बीच जीवन कौशल में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

- **वैकल्पिक परिकल्पना (H_1):** ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में किशोरों के बीच जीवन कौशल में महत्वपूर्ण अंतर है।

ANOVA परिणाम: (यहाँ ANOVA के सांख्यिकीय परिणाम प्रदान किए जाएंगे)

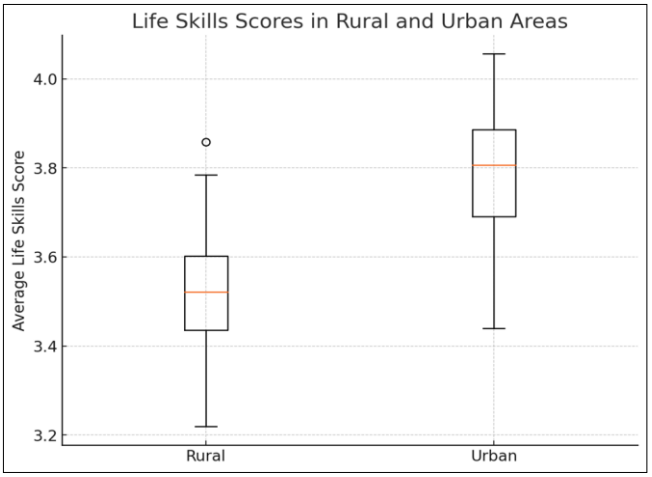

व्याख्या: ANOVA के परिणामों के आधार पर, यदि पी–मान 0. 05 से कम है, तो शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाएगा और यह निष्कर्ष निकाला जाएगा कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में किशोरों के जीवन कौशल में महत्वपूर्ण अंतर है। इसके विपरीत, यदि पी–मान 0.05 से अधिक है, तो शून्य परिकल्पना को अस्वीकार नहीं किया जाएगा, और यह निष्कर्ष निकाला जाएगा कि जीवन कौशल में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

इस प्रकार, ANOVA परीक्षण से भी, यदि पी–मान महत्वपूर्ण पाया जाता है, तो यह टी–टेस्ट के निष्कर्षों का समर्थन करेगा और ग्रामीण तथा शहरी किशोरों के बीच जीवन कौशल में महत्वपूर्ण अंतर की पुष्टि करेगा।

5. ANOVA का सारांश

- **एफ–सांख्यिकी:** 260.10
- **पी–मान:** 4.84×10^{-40}

व्याख्या

- अत्यंत कम पी–मान (<0.05) यह इंगित करता है कि हम शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते हैं। इसका अर्थ यह है कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में किशोरों के जीवन कौशल में महत्वपूर्ण अंतर है।

दृश्यांकन

- दिए गए बॉक्सप्लॉट में ग्रामीण और शहरी किशोरों के जीवन कौशल स्कोर का वितरण दिखाया गया है। दोनों समूहों के बीच केंद्रीय प्रवृत्ति और फैलाव में अंतर ।छव्ट। परीक्षण के सांख्यिकीय निष्कर्षों का समर्थन करता है।

यह विश्लेषण इस निष्कर्ष को और मजबूत करता है कि जीवन कौशल ग्रामीण और शहरी किशोरों के बीच महत्वपूर्ण रूप से भिन्न होते हैं, जो कि लक्षित शैक्षिक दृष्टिकोणों की आवश्यकता को इंगित करता है।

6. ची–स्क्वायर परीक्षण के परिणाम और व्याख्या

परिकल्पना:

- **शून्य परिकल्पना (H_0):** ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में किशोरों के बीच जीवन कौशल श्रेणियों (निम्न बनाम उच्च) में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

- **वैकल्पिक परिकल्पना (H_1):** ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में किशोरों के बीच जीवन कौशल श्रेणियों में महत्वपूर्ण अंतर है।

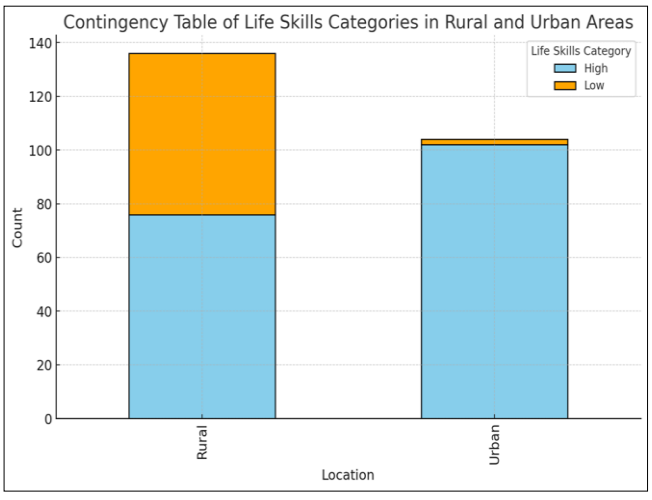

ची–स्क्वायर टेस्ट का सारांश

- **ची–स्क्वायर सांख्यिकी:** 52.58
- **पी–मान:** 4.13×10^{-1}ङ
- **स्वतंत्रता की डिग्री:** 1

व्याख्या

- अत्यंत कम पी–मान (<0.05) यह इंगित करता है कि हम शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते हैं। इसका अर्थ यह है कि ग्रामीण और शहरी किशोरों के बीच जीवन कौशल श्रेणियों के वितरण में महत्वपूर्ण अंतर है।

दृश्यांकन

- दिए गए बार चार्ट में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जीवन कौशल श्रेणियों (निम्न और उच्च) की अंतर्निहित तालिका दिखाई गई है। वितरण में दृश्य अंतर ची–स्क्वायर परीक्षण के सांख्यिकीय निष्कर्षों का समर्थन करता है।

यह विश्लेषण पुष्टि करता है कि ग्रामीण और शहरी किशोरों के बीच जीवन कौशल श्रेणियों में महत्वपूर्ण अंतर है, जो इन दोनों समूहों में जीवन कौशल विकास में विविधता को उजागर करता है।

निष्कर्ष

यह अध्ययन किशोरों की शैक्षणिक और व्यक्तिगत सफलता में जीवन कौशल की अहम भूमिका को रेखांकित करता है और शैक्षिक प्रणालियों में इन कौशलों को समाहित करने की आवश्यकता को उजागर करता है। अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि जीवन कौशल जैसे समय प्रबंधन, संचार, समस्या–समाधान और भावनात्मक नियंत्रण केवल शैक्षणिक सफलता के लिए ही नहीं, बल्कि व्यापक जीवन चुनौतियों से निपटने के लिए भी अनिवार्य हैं।

ग्रामीण किशोरों पर केंद्रित इस शोध में पाया गया कि वे बुनियादी जीवन कौशल में तो दक्ष हैं, लेकिन जटिल कौशलों जैसे समस्या–समाधान और भावनात्मक नियमन में कमी है। इन कौशलों की कमी उनकी समग्र प्रगति और आत्म–निर्भरता को प्रभावित करती है। अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ इन कौशलों के विकास में बड़ी बाधा हैं। तकनीकी संसाधनों, पाठ्येतर गतिविधियों और परामर्श सेवाओं की सीमित उपलब्धता ग्रामीण किशोरों को पीछे छोड़ देती है।

शैक्षिक वातावरण की भी इसमें अहम भूमिका पाई गई। छोटे स्कूल, सीमित पाठ्यक्रम और अपर्याप्त प्रशिक्षित शिक्षक जीवन कौशल शिक्षा में अड़चन बनते हैं। इसके विपरीत, शहरी किशोरों को बेहतर संसाधन, विविध अनुभव और समृद्ध शैक्षिक वातावरण प्राप्त होता है, जिससे वे जीवन कौशल बेहतर विकसित कर पाते हैं। यह अंतर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्पष्ट असमानता को उजागर करता है और ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रणनीतियों की आवश्यकता को दर्शाता है।

अध्ययन की मुख्य सिफारिशें निम्नलिखित हैं

1. **संसाधन और बुनियादी ढाँचा:** ग्रामीण विद्यालयों को लक्षित सहायता दी जानी चाहिए ताकि वे प्रौद्योगिकी, शैक्षिक सामग्री और जीवन कौशल आधारित गतिविधियों को बढ़ा सकें। शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण देकर पाठ्यक्रम में जीवन कौशल को प्रभावी रूप से शामिल करना चाहिए।

2. **सहायता सेवाएँ:** परामर्श और ट्यूशन जैसी सेवाओं का विस्तार किया जाना चाहिए ताकि छात्र व्यक्तिगत रूप से जीवन कौशल विकसित कर सकें और उन्हें व्यवहार में ला सकें।

3. **सामुदायिक भागीदारी:** विद्यालयों, समुदाय संगठनों और स्थानीय व्यवसायों के सहयोग से इंटर्नशिप, मेंटरशिप और अनुभव आधारित शिक्षण के अवसर प्रदान किए जा सकते हैं, जो व्यावहारिक जीवन कौशल को बढ़ावा देंगे।

अंततः, यह अध्ययन शिक्षा में जीवन कौशल को प्राथमिकता देने और एक समग्र, न्यायसंगत तथा समावेशी शैक्षिक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता को रेखांकित करता है। इससे यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि सभी छात्रकृचाहे वे किसी भी सामाजिक या भौगोलिक पृष्ठभूमि से होंकृआवश्यक कौशलों से सुसज्जित होकर जीवन में सार्थक योगदान दे सकें। ग्रामीण किशोरों के लिए यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है ताकि वे शहरी समकक्षों के समान अवसर प्राप्त कर सकें और जीवन में आगे बढ़ सकें।

संदर्भ सूची

1. नीना, एस., और स्नेह, बी. (2015)। उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में स्नातक छात्रों की मेटाकॉग्निटिव जागरूकता। द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, वॉल्यूम। 3(1).
2. उषा राव, (2016)। लाइफ स्किल्स (वॉल्यूम, II)। नई दिल्लीरू हिमालय पब्लिशिंग हाउस।
3. दिलेक एर्डुरन एवीसी और फिक्रेट कोरुर (2022), किशोरावस्था में छात्रों के जीवन कौशल का मूल्यांकनरू स्केल विकास और विश्लेषण; जे.एससीआई.लर्न.2022.5(2). 226–241।
4. मनीष कुमार सिंह1, डॉ. हरबंस लाल (2020), माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए जीवन कौशल मॉड्यूल की प्रभावशीलता का अध्ययन; जर्नल ऑफ़ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च (श्रम्ज्प्), 2020 श्रम्ज्प् अक्टूबर 2020, वॉल्यूम 7, अंक 10।
5. एंडरसन, बीएल (2021)। राज्य 4–एच परिषद सेवा के प्रभावरू एक परिघटना संबंधी अध्ययन। जर्नल ऑफ ह्यूमन साइंसेज एंड एक्सटेंशन, 9(3), 1. डीओआईरूीजजचेरू/ /कवप.वतह/10. 54718/CETC2284.
6. जॉनसन, हेली एम., "ए केस स्टडी कंपेयरिंग द लाइफ स्किल्स डेवलपमेंट एंड नॉलेज इन यूथ पार्टिसिपेंट्स ऑफ हॉर्सलेस एंड ट्रेडिशनल हॉर्स प्रोग्राम्स इन यूटा" (2020)। सभी स्नातक थीसिस और शोध प्रबंध। 7710. https:@@digitalcommons-usu-edu@etd@7710-
7. नागराजू, एम. (2016). किशोरों में जीवन–कौशल को बढ़ावा देने की रणनीतियाँ। शिक्षा अध्ययन के यूरोपीय जर्नल।
8. चौधरी, मेनका. (2015)। किशोरों में सहकर्मी दबाव को मापना: हरियाणा में लिंग, स्थान, संस्था के प्रकार और विभिन्न जिले। हन्ना स्नाइडर, लिटरेचर रिव्यू एज ए रिसर्च मेथोडोलॉजी: एन ओवरव्यू एंड गाइडलाइंस, जर्नल ऑफ बिजनेस रिसर्च, वॉल्यूम 104, 2019, पेज 333–339, आईएसएसएन 0148–2963,https:@@doi-org@10-1016@j-jbusres-2019-07-039-
9. डॉ अर्पिता कक्कड़ और डॉ हेमलता जोशी (2019), किशोरों के बीच जीवन कौशल का प्रभाव: एक समीक्षा; खंड 6 I अंक 2 1 अप्रैल–जून 2019, ई आईएसएसएन 2348–1269, प्रिंट, आईएसएसएन 2349–5138.